एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

खेजड़ी: सूखे में भी जीवन की कहानी

*हेमलता गुर्जर एवं अनीता चौधरी
स्नातकोतर विद्वान (सस्य विज्ञान), कृषि महाविद्यालय, नागौर, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: hemlataposwal5@gmail.com

खेजड़ी का पेड़ (*प्रोसोपिस सिनेरिया*), जिसे थार रेगिस्तान का "कल्पवृक्ष" या "चमत्कारी वृक्ष" कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण, सूखा-प्रतिरोधी दलहन है जो राजस्थान के शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह पोषक तत्वों से भरपूर चारा (लूंग), मानव भोजन (सांगरी फली) प्रदान करता है और नाइट्रोजन स्थिरीकरण के माध्यम से मिट्टी की उर्वरता में सुधार करता है, जिससे अकाल के दौरान जीवन यापन संभव हो पाता है।

वनस्पति संबंधी विशेषताएँ

कुल: फैबेसी (लेगुमिनोसी)

रूप-रंग: यह एक छोटा से मध्यम आकार का पेड़ होता है, जिसकी ऊंचाई आमतौर पर 10-12 मीटर होती है, और इसकी जड़ें गहरी होती हैं, जिससे यह भूजल पर पनप सकता है।लचीलापन: कम से कम पानी के साथ अत्यधिक शुष्क जलवायु में उगने की अपनी क्षमता के लिए जाना जाता है, यह पारंपरिक कृषि वानिकी प्रणालियों में एक कठोर बारहमासी घटक के रूप में कार्य करता है।

प्रजनन: यह पौधा सबसे गर्म महीनों (मार्च-जून) के दौरान नए पत्ते, फूल और फल पैदा करता है।

पारिस्थितिक और कृषि महत्व

मिट्टी की उर्वरता: एक फलीदार पौधे के रूप में, यह नाइट्रोजन को स्थिर करता है, जिससे मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर होता है और आसपास की फसलों के लिए पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है।कृषि वानिकी: इसकी गहरी जड़ प्रणाली फसलों के साथ नमी के लिए प्रतिस्पर्धा को रोकती है, जबकि इसकी एकल-स्तरित छत्र प्रणाली सूर्य के प्रकाश

को कृषि पौधों तक पहुंचने देती है, जिससे समग्र कृषि उपज में वृद्धि होती है।मरुस्थलीय स्थिरीकरण: यह एक प्रभावी पवन अवरोधक के रूप में कार्य करता है और रेत के टीलों के स्थिरीकरण को रोकता है।जल प्रबंधन: यह वृक्ष जमीन के गहरे भूमिगत स्रोतों से पानी खींचने में सक्षम है, जिससे आसपास की वनस्पतियों को नमी मिलती है।

आर्थिक और पोषण संबंधी मूल्य

संगरी (फली):कोमल हरी फलियाँ राजस्थानी व्यंजनों में एक लोकप्रिय सामग्री हैं, विशेष रूप से पंचकुट्टा *व्यंजन में*।लूंग (चारा): इसके पौष्टिक पत्ते जानवरों के लिए चारे का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं, खासकर सूखे के दौरान।औषधीय गुण: पेड़ के विभिन्न भागों (छाल, पत्तियां) का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में गठिया और त्वचा संबंधी बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है।

ईंधन/लकड़ी: यह ग्रामीण समुदायों के लिए टिकाऊ जलाऊ लकड़ी और लकड़ी उपलब्ध कराता है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व

राज्य वृक्ष: खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष है।बिश्नोई समुदाय: बिश्नोई समुदाय खेजरी वृक्ष को पवित्र मानता है। सन् 1730 ईस्वी में, खेजरली गांव में खेजरी वृक्षों को काटे जाने से बचाने के लिए 363 बिश्नोई लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया।सांस्कृतिक प्रतीक: इसे अक्सर हरियाणा में "जंती", पंजाब में "जंद" और भारत के अन्य हिस्सों में "शमी" के नाम से जाना जाता है।

खतरे और संरक्षण

अपनी सहनशीलता के बावजूद, खेजरी का पेड़ वर्तमान में अत्यधिक दोहन, भूमि उपयोग में परिवर्तन और बढ़ती मृत्यु दर के कारण खतरे में है। इस रेगिस्तानी विरासत को संरक्षित रखने के लिए संरक्षण प्रयास, जिनमें देशी स्तर पर पौधों को उगाना और जागरूकता बढ़ाना शामिल है, अत्यंत महत्वपूर्ण हैं